This question paper contains 2 printed pages.

Your Roll No. ....

Sl. No. of Ques. Paper : 7825 **GC**

Unique Paper Code : **62051104**

Name of Paper : **Hindi-C**

Name of Course : **B.A. (Prog.)**

Semester : **I**

Duration : **3 hours**

Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) यह धरती कितना देती है! धरती माता
कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को!
नहीं समझ पाया था मैं उसके महत्त्व को,
बचपन में छिः, स्वार्थ लोभ वश पैसे बो कर!
रत्न प्रसविनी है वसुधा, अब समझ सका हूँ!

अथवा

निज गौरव का नित ज्ञान रहे
हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे।
मरणोत्तर गुन्जित गान रहे
सब जाय अभी पर मान रहे
कुछ हो न तजो निज साधन को
नर हो, न निराश करो मन को।

(ख) रावरै रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारियै।
त्यौं इन आंखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन तिहारियै।
एक ही जीव हुतौ सु तौ वारयौ सुजान सकोच और सोच सहारियै।
रोकी रहै न, दहै घनआनंद बाबरी रीझ के हाथनि हारियै।।

अथवा

कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाये बौरात है, या पाये बौराय।।

(ग) निदंक नियरे राखिये आँगन कुटि छबाय।
बिन पाणी साबुण बिना निरमल करै सुभाय।।

अथवा

ऊधौ मन न भय दस बीस।
एक हुतौ सो गयौ स्याम सँग, को अवराधै ईस।
इंद्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस।

P. T. O.

P.T.O.

आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस।
तुम तौ सखा स्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस।
सूर हमारैं नंद-नंदन बिनु, और नहीं जगदीस।। 10+10+

2. "मैया मैं नहिं माखन खायौ" —सूरदास के इस पद का आशय स्पष्ट कीजिए।

अथवा

कबीर के काव्य की विशेषताएँ लिखिए।

3. बिहारी **अथवा** घनानंद का साहित्यिक परिचय दीजिए।

4. 'नर हो, न निराश करो मन'— गुप्त जी की कविता का भाव स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'आह धरती कितना देती है' का सार लिखिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए:

(i) हिन्दी भाषा का सामान्य परिचय

(ii) हिन्दी का भौगोलिक विस्तार

(iii) हिन्दी साहित्य का आदिकाल

(iv) भक्तिकाल की विशेषताएँ

(v) छायावादी कविता

(vi) प्रगतिवाद का परिचय।